साईकिल

शिवयोगी

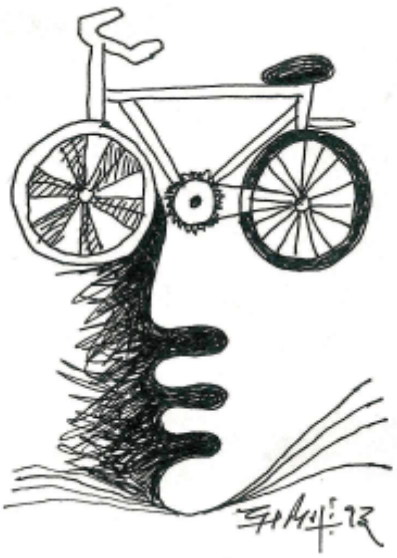

जैसे शरीर और प्राण
रहते हैं एकमेक
जाने कहां-कहां
किसी भी मौसम में
जाती आती रही मेरे संग
नदी नाले पार करती रही
मेरे वश में नहीं अब
आवास की छत के टिकी है वह

इन दिनों
जब बारिश घिर रही है
कर देता हूं उलट-पलट
देखता हूं निरंतर
जंग से घिर रही है
पिता मुझे टोह रहे हैं। ◆

और क्या करते पिता
फिर से ले गए मुझे उसी स्कूल में
जिससे लगातार अनुपस्थित रहने के चलते
निकाला गया था मुझे हाल ही में

बहत्तर सीढ़ियों वाला
वह विशालकाय भवन
उच्च माध्यमिक विद्यालय
प्रिंसिपल के समक्ष
गिड़गिड़ाते हुए कहा पिता ने
मैं तो मजदूर हूं मालिक
रेल पटरियों की गैंग में
करता हूं मजदूरी

एक बार और दाखिला दे दें
मेरी अरजी पर
बमुश्किल आया हूं
जमादार से छुट्टी लेकर

अब तस्वीर से
मुझे देखते रहते हैं पिता

नवीं फेल होने पर भी
स्टेशन से शहर जाने के लिए
दिलवाई मुझे साईकिल

शिवयोगी

राजस्थान के सवाई माधोपुर जिले के एक कवि हैं। सवाई माधोपुर की साहित्यिक और सांस्कृतिक गतिविधियों से जुड़े हैं।